**International Research Journal of Human Resources and Social Sciences**
ISSN(O): (2349-4085) ISSN(P): (2349-4218)
**Impact-** Factor 5.414 Volume 5, Issue 3, March 2018
**Website**- www.aarf.asia, **Email** : editoraarf@gmail.com

# शिवमंगल सिंह सुमन के काव्य में प्रेम

डॉ हरिशंकर प्रजापति, व्याख्याता– हिन्दी
राजकीय शास्त्री संस्कृत महाविद्यालय, तलावगांव

अनादि काल से जगत में चला आ रहा आत्मिक भाव है प्रेम, जो सकल विश्व में जड़ चेतन के रागात्मक सम्बन्धों की अभिव्यक्ति करता है । नालंदा विशाल शब्दसागर में प्रेम शब्द इस प्रकार व्यक्त है––प्रणय, प्रेमपूर्वक प्रार्थना, विश्वास,भरोसा, निर्माण,मोक्ष, श्रद्धा, प्रसाद आदि।[1]प्रेम शब्द अपने में विराट अर्थों को समेटे हुए हैं। प्रेम शब्द का व्यवहार रूप, गुण, कामवासना, प्रीति, अनुराग, अनुरक्ति आदि में होता है। यह एक ऐसी अनुभूति है जिसे शब्दों में व्यक्त करना संभव नहीं है। प्रेम का एहसास उस पुष्प की तरह है जिसकी खुशबू को सूंघा तो जा सकता है छुआ नहीं जा सकता।

प्रेम अथवा प्रेमन् भाववाचक संज्ञा है, यह संस्कृत में नपुंसकलिंग एवं हिंदी में दोनों लिंगों में प्रयुक्त होता है। कबीर मानवता के विकास में प्रेम का अहम योगदान मानते हैं। वह कहते हैं–

**जा घट प्रेम न संचरै, सो घट जानि मसान।**
**जैसे खाल लोहार की, सांस लेते बिन प्राण।।[2]**

उपन्यास सम्राट प्रेमचंद के अनुसार प्रेम एक भावना का विषय है, भावना से ही उसका पोषण होता है और भावना से लुप्त हो जाता है।[3]

आचार्य रामचंद्र शुक्ल के अनुसार ''विशिष्ट वस्तु या व्यक्ति के प्रति होने पर लोग सात्विक रूप प्राप्त करता है जिसे प्रीति या प्रेम कहते हैं।''[4]

भगवानदास ने प्रिय से प्रेमी की मिलनेच्छा को प्रेम कहाहै। यह दो प्रेमियों को एक स्तर पर ला खड़ा करता है, जिसमें वे परस्पर संबद्ध होकर एकात्मक हो सकें।[5]

पाश्चात्य विचारक प्रेम को एक अलग तरह से परिभाषित करते हैं प्लेटो के अनुसार ''प्रेम अनुभव से रहित व्यक्ति सदा अंधकार में भटकता रहता है।''[6]

नीत्से का मत है की प्रेम से ही हमारे अंतर्चक्षु खुलते हैं।[7]

प्रेम एक व्यापक शब्द है और जो व्यापक होता है उसे परिभाषा के बन्धनों में नहीं बांधा जा सकता । वैसे भी प्रेम परिभाषाहीन होकर जब अनुभूति के क्षेत्र में उतरता है ,तब हृदय का ऐसा भाव बन जाता है जिसके समक्ष अन्य भाव बहुत छोटे लगने लगते हैं। प्रेम जीवन की अनिवार्यता है, प्रेम शरीर से शरीर की यात्रा नहीं, यह मन से प्रारंभ होने वाली, शरीर की गलियों से गुजरती हुई आत्मा की हवाई यात्रा है, जहां आनंद का अमृत बरसता है।[8]

**© Associated Asia Research Foundation (AARF)**
A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International e-Journal - Included in the International Serial Directories.

प्रेम की अनुभूति के बारे में निश्चितता से कुछ भी नहीं कहा जा सकता, परंतु जब से एक काव्य पंक्ति आई–

**वियोगी होगा पहला कवि**
**आह से उपजा होगा गान ।[9]**

इस से स्पष्ट होता है की काव्य के प्रारंभ से पहले भी प्रणय भाव रहा है, जो काव्य के प्रारंभ के साथ ही आज तक साहित्य में विराजित है। वैसे तो प्रेम किसी समय या युग विशेष का बंधा हुआ नहीं रहा, परंतु हिंदी साहित्य के आधुनिक काल में भी छायावाद के रूप में स्वच्छन्दता एवं रोमांस की कविता के रूप में एक पूरा युग ही प्रेम को समर्पित है। इसी छायावाद के अंतिम समय में एक महत्वपूर्ण कवि के रूप में शिवमंगल सिंह सुमन का नाम भी उल्लेखनीय है।

शिवमंगल सिंह सुमन छायावाद के अंतिम दौर के विद्रोही कवि के रूप में हिंदी कविता में आए। प्रारंभ में इन्होंने ऐसी कविताओं का सृजन किया जिनमें एक और प्रेम की पीर का भाव है तो दूसरी ओर यौवन के उल्लास और उमंग को देखा जा सकता है। सुमन जी का काव्य जीवन के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण, जीवन जीने की जिजीविषा भाव, सत्य के प्रति आस्था, स्वस्थ और संतुलित जीवन दृष्टि, संवेदना के क्रम में जागृत भाव आदि विशेषताएं समेटे हुए हैं । वे सामाजिक जीवन के मानवीय मूल्य के संचयन, संतुलन व संवर्धन पर जोर देते हैं ,परंपराओं के प्रति जागरूक होने का परिचय देते हैं। आधुनिकता के प्रति उनके काव्य में अंधश्रद्धा नहीं है। उनके काव्य में मानव की अनुभूति ही कवि की अनुभूति बनकर प्रदर्शित होती है। उनके काव्य में अनुभूति की सच्चाई है, व्यक्तित्व को परिष्कृत करने का मार्ग है, मानवता को सहेजने– पुकारने का माध्यम है।

कवि सुमन की काव्य यात्रा अनेक संग्रहों के रूप में सामने आई है, लगभग 54 वर्षों में उनकी नौ काव्य पुस्तकें प्रकाशित हुई जिनके नाम हैं– हिल्लोल, जीवन के गान, प्रलय सृजन, विंध्य हिमालय,, विश्वास बढ़ता ही गया, पर आंखें नहीं भरी, मिट्टी की बारात, वाणी की व्यथा और कटे अंगूठे की बंदनवारें। इनके अतिरिक्त उन्होंने कुछ काव्य कृतियों का संपादन भी किया है। शिवमंगल सिंह सुमन छायावाद के बाद प्रारंभ हुए प्रगतिवाद के प्रमुख कवि माने जाते हैं परंतु यह सच है कि वे प्रगतिवादी से अधिक स्वच्छंदतावादी हैं। वे किसी प्रवृत्ति विशेष में बंद होकर रचनाशील नहीं हो सके । सुमन जी मूलतः रोमांटिक स्वभाव के कवि हैं और उनका रोमांटिसिज्म ही उन्हें निराला की तरह स्वच्छंदतावादी बनाए रखता है । इनकी कविताओं में कभी नवीन, सुभद्रा कुमारी चौहान, दिनकर, माखनलाल चतुर्वेदी की तरह विद्रोही भाव, राष्ट्रीयता, ओज, छलछलाता रहता है तो पंत, प्रसाद की तरह प्रकृति प्रेम और सौंदर्य का प्रकाश चित्र भी देखने को मिलता है तो वह कभी निराला की तरह यथार्थवादी लेखांकन भी करते दिखाई देते हैं। सुमन जी ने विविध रंगी विविध आयामी कविताएं लिखी है, वे युगधर्माकवि हैं जो कहीं भी बंधकर नहीं होता बल्कि मुक्त होकर शेष जगत से अपना गहरा तादात्म्य स्थापित करता है । सुमन के काव्य में प्रभाव की अभिव्यक्ति मिलती है, सुमन का प्रथम काव्य संग्रह हिल्लोल है जिसमें सुकुमार मन की प्रेम भावना ने अभिव्यक्ति पाई है।। इस कविता संग्रह के अंतर्गत सुमन जी ने प्रेम अनुभूति से आर्द्र हुए गीतों को प्रमुखता से अपने काव्य मेंनिबद्ध किया है। इस संग्रह की कविताओं में कवि का असफल प्रेम और उसकी प्रकार विरहानुभूति चित्रित हुई है प्रेम जनित निराशा से प्रेरित होकर सुमन जी ने जीवन की क्षणभंगुरता पर भी कुछ पंक्तियां लिखी है। कवि मानता है कि प्रेमी और प्रिया दोनों युवा है,

दोनों में परस्पर आकर्षण है किंतु वह स्वीकार करता है कि दोनों का यौवन आज है कल नहीं । अतः क्षण भर हँसकर, मिलकर आनंद से जीवन बिताना चाहिए।

हिल्लोल काव्य संग्रह की कविताएं सुमन जी के किशोर मन की तरंगे हैं जिसमें हृदय आलोडित हो उठा है। सुमन अपनी प्रेयसी से प्रणय की भीख मांगते है–

**मौन मत हो आज तुमसे मैं प्रणय की भीख मांग लूंगा**
**छोड़ चल दोगी ? मुझे क्या दिल भर चीख लूंगा**
**हो चुका जो कुछ हुआ, बीते समय की बात भूलो**
**सच बता दो, क्या कभी मैं प्यार करना सीख लूंगा।।**[10]

सुमन का कभी मन अपनी प्रेयसी से प्रेम निवेदन करता हुआ चुप रहने के लिए कहता है तथा प्रणय की भीख भी मांगता है।

कवि सुमन प्रणय को वासना का अंजाम भी देना चाहता है, इंद्रिय तृप्ति को अपना ध्येय समझ बैठता है। हिल्लौल काव्यसंग्रह की कविता 'देखो मालिन मुझे न तोड़ो' में अपनी प्रेमिका से कवि का भावुक मन कह उठता है–

**हम तुम दोनों में यौवन हैं**
**दोनों में आकर्षण**
**दोनों कल मुरझा जाएंगे**
**कर क्षणभर मधु वर्षण।।**[11]

कवि सुमन का हृदय एक अल्हड़ मस्ती में झूमता हुआ काव्य मे अपनी प्रणयी मादकता को स्वरूप प्रदान करता है। सुमन के प्रारंभिक काव्य 'हिल्लोल' मे किशोर मन की मादकता छलकती है परंतु कवि मन सीमाओं में बंधा हुआ है। सुमन की कविताओं में वैयक्तिक अनुभूति है, इसी को आधार मानकर डॉ आनंद प्रकाश दीक्षित ने अपनी पुस्तक 'आज के लोकप्रियहिंदी कवि डॉ शिवमंगल सिंह सुमन' में लिखा है–'वैयक्तिक प्रणय अनुभूति के छंदों पर लहराता भावुक मन का तारतम्य हिल्लोल संग्रह के गीतों का मुखर स्वर है, किंतु प्रणय की इन अनावृत एवं अनलंकृत अंखियों में जीवन की बहुविधता की अनुभूति से युवक कवि का मन भी अनबिंधा नहीं रह सकाह।[12]

मनुष्य का हृदय कठोरता– कोमलता से भरा होता है। सुमन जी का हृदयएक कवि हृदय है अतः कोमलता और भावुकता स्वाभाविक है। सुमन जी का मन भाव की तरलता में इतना बह गया कि उन्हें कि उन्हें मान मर्यादा की भी चिंता नहीं रही औरअपनी प्रेयसी पर आत्मसमर्पित हो गए–

**होठों से शोले, नैनों से निकली यदि चिंगारी न प्रखर**
**अधरों में भर असीम त्रिष्णा यदि पी न सका अथाह सागर**
**लेकर इतनी विरह वेदना व्यथा किसी योग फिर यह यौवन**
**व्यर्थ मिला ही क्यों यह जीवन।।**[13]

कविवर सुमन के भावुक हृदय की तरलता में समय के साथ–साथ बदलाव आया अपरिपक्व मन की बेहोश मादकता धीरे–धीरे स्वस्थ रूप धारण कर लेती है। प्रिया की याद आने पर कवि मन कूक उठता है–

**खिड़की से झीनी झीनी**
**बौछार बिखरती आई**
**अनायास ही किसी निठुर की याद दृगों में आई**
**पानी बरसा कहीं, किसी की बहा आंख का काजल**
**आज रात भर बरसे बादल।।**[14]

सुमन के काव्य की मूल प्रेरणा प्रेम है।प्रणय की मृदुलता उसका सम्मोहन और विरह की आकुल अनुभूति जैसा सहज स्वाभाविक अंकन उनकी कविताओं में हुआ है। सुमन जी ने अपनी प्रेयसी के सौंदर्य तथा मादक मिलन की वैयक्तिक अनुभूतियों को इस प्रकार चित्रित किया है–

**मैं चूम चुका मधुबाला के**
**सौरभ सुरभित मधुसिक्त अधर**
**मैंने पी डालें शीतल नभ**
**अगणित सागर सरिता निर्झर।।**[15]

कवि सुमन ने अपने रोमांस के संबंध में लिखा है– मैंने कभी फैशन या प्रदर्शन के लिए कविता नहीं की अपने प्रत्यक्ष बोध के आधार पर काव्य सृष्टि की है।[16]
'सुमन'अपने यौवन के रोमांटिक दिनों की स्मृति करते हुए कहते हैं–

**जब मुस्काने में उषा**
**हंसी में ज्योत्सना**
**पलकों में बसंत**
**अलसाई आंखों में संध्या**
**आलिंगन में सीमित अनंत**
**वे दिन सपने से गए कहां?**[17]

कवि सुमन के अंतर में जगत की पीड़ा का दुख भरा हुआ है वह अपनी प्रेमिका से कहता है कि जब यह पीड़ा मैं सह नहीं सकूं और अति दुख के कारण जब हताश स्वर में रोने लगूं, तो तुम मेरे स्वर में अपना स्वर मिला देना, क्योंकि मैं तो तेरे ही मन का पंछी हूं मैं तेराही साया हूं इसलिए प्यार में इतना साथ निभा देना। कवि सुमन अपने काव्य संग्रह 'जीवन के गान ' में अपनी प्रेयसी से कहता है–

**पलकों के पलने पर प्रेयसी**
**यदि क्षण भर तुम्हें भुला ना सका**
**विश्रांत तुम्हारी गोदी में**
**अपना सुख दुख भुला ना सका**
**क्यों तुम में इतनाआकर्षण**
**क्यों कनक वलय की खनन खनन**
**फिर व्यर्थ मिला ही क्यों जीवन ।।** [18]

उन्होंने स्वयं को वेदना सागर में डुबो दिया है। सुमन की बिरहा अनुभूति के अनेक चरण हैं कर्तव्यपरायणता को ध्यान में रखकर अपनी प्रेमिका से अलग हो जाते हैं। कविता 'संघर्ष प्रणय' मैं अपनी प्रेयसी से कहते हैं–

**मैं कर्तव्य विवश था वरना तुममें निज को लय कर देता**
**तिल तिल कर निज अस्तित्व मिटाकर अपने को प्रियमय कर देता।।** [19]

अनुराग के बिना जीवन अधूरा रहता है अतः जीवन जीने के लिए प्यार की आवश्यक है सच्चा प्यार त्याग ही अपनी पूर्णता प्राप्त करता है। प्रेम में जब विदाई होती है तो हृदय पत्थर हो जाता है, गला भर जाता है, कभी–कभी हर पल का प्यार भी जीने का सहारा बन जाता है।

**क्षणभर की पहचान**
**जगत में जीने का सामान दे गई**
**पग की प्रथम रुझान**
**पंथ में मिटने का अरमान दे गई ।।**[20]

समग्र विवेचन के उपरांत यह निष्कर्ष उभर कर सामने आता है कि प्रेम एक व्यापक भाव है, वह वासना का पर्याय न होकर एक उदात्त भाव है। वह शरीर की सीमाओं से ऊपर उठा हुआ रहता है । सुमन जी के काव्य में जो प्रणय और सौंदर्य के चित्र मिलते हैं वह हमें स्पष्टसंकेत देते हैं कि वे प्रेम और सौंदर्य को वैयक्तिक भूमिका पर अनुभव करते हैं और दूसरा उनकी प्रेम मानस भूमि उत्तरोत्तर विकसित होती हुई समस्ती में जाकर विलीन हो जाती है । उनके प्रेम में एक ऐसी गहरी भावना है जो जड़ चेतन सभी से जुड़कर प्रेम को स्वस्थदिशा देती हुई विश्व प्रेम से जोड़ देती है।

संदर्भ–


1 नालन्दाविशाल शब्दसागर संस्करण 1984 पृ 887
2 कबीर ग्रन्थावली , डॉ श्यामसुन्दर दास
3 मुंशी प्रेमचन्द रंगभूमि पृ 452
4 रामचन्द्र शुक्ल लोभ और प्रीति निबन्ध
5 डॉ भगवानदास साइंस ऑफ इमोशन पृ 30
6 डॉ देशराज भाटी बाणभट्ट की आत्मकथा समीक्षा पृ 157
7 वहीं पृ 157
8 डॉ हरिचरण शर्मा डायरी के पृष्ठ से उद्धृत
9 सुमित्रानन्दन पंत
10 सुमन. हिल्लोल कविता पृ 18
11 सुमन. समग्र खण्ड 1 पृ 27 हिल्लोल
12 डॉ आनन्दप्रकाश दीक्षित आज के लोकप्रिय हिन्दी कवि पृ 04
13 डॉ शिवमंगलसिंह सुमन जीवन के गाान पृ 77
14डॉ शिवमंगलसिंह सुमन पर आंखें नहीं भरी पृ 24
15सुमन. समग्र खण्ड 1 पृ 154
16सुमन. समग्र खण्ड 1 पृ 06
17सुमन. समग्र खण्ड 1 पृ 36
18 डॉ शिवमंगलसिंह सुमन जीवन के गाान पृ 77
19 सुमन. समग्र खण्ड 1 पृ 55 हिल्लोल
20 डॉ शिवमंगलसिंह सुमन पर आंखें नहीं भरी पृ 60 –61